शोध मंथन Vol. XIV No.IV Oct.-Dec. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन : प्रासंगिकता एवं औचित्य

प्राप्तिः 08.12.2023
स्वीकृतः 25.12.2023

विरेन्द्र सिंह
शोधार्थी, राजनीतिक विज्ञान विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक
ईमेलः *virenderjandli@gmail.com*

98

सारांश

इस शोध पत्र का मुख्य उददेश्य यह स्पष्ट करना है कि शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद बदलती हुई विश्व व्यवस्था में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की क्या प्रांसगिकता है? तथा बदलते हुए परिवेश में किन बुनियादी मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करके समता मूलक विश्व व्यवस्था की स्थापना की जा सकती है?

17वीं शताब्दी में यूरोप में सम्प्रभुता सम्पन्न राष्ट्रीय राज्यों के उदय के पश्चात से लेकर लगातार महाशक्तियों के प्रभुत्व के विरूद्ध छोटे और कमजोर देशों ने 350 वर्षों के संघर्ष के उपरान्त द्वितिय विश्व युद्ध के तुरन्त बाद गुटनिरपेक्षता की एक विदेश नीति तथा नवोदित राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले संगठन के रूप में उत्पति हुई है। अतः विश्व चाहे एक ध्रुवीय हो अथवा बहुध्रुवीय हो, छोटे एंव कमजोर देशों की विदेश नीति तथा अन्दोलन के रूप में कमजोर देशों की विदेश नीति तथा आन्दोलन के रूप में इसकी वैधता एंव प्रांसगिकता निश्चित रूप से बनी रहने वाली है। अर्थात जब तक सम्प्रभुता सम्पन्न राष्ट्रीय–राज्य प्रणाली रहेगी तब गुट–निरपेक्ष की नीति एंव गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रांसगिकता बनी रहेगी।

मुख्य बिन्दु

गुटनिरपेक्षता, राष्ट्र–राज्य व्यवस्था, एक ध्रुवीयता, द्विध्रुवीयता, बहुध्रुवीयता, बहुपक्षीय, संरक्षणवाद, विश्व व्यवस्था।

उपकल्पनाएँ

- शीत युद्धोतर युग में आर्थिक एंव सामरिक संदर्भो में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन पहले से अधिक प्रासंगिक है।
- बहुध्रुवीय विश्व की स्थापना के लिए यह संगठन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- नवीन अन्तराष्ट्रीय व्यवस्था में गुट निरपेक्ष आन्दोलन गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण, एड्स, आंतकवाद एंव पर्यावरण से जुड़ी हुई समस्याओं से निपटने के लिए विकसित एंव विकासशील देशों के साथ मिलकर काम कर सकता है।

प्रविधि

इस शोध पत्र को पूर्ण करने के लिए ऐतिहासिक एंव विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धतियों का प्रयोग किया है तथा प्रमुख रूप से द्वितीय स्त्रोतों जैसे शोध–पत्र, पुस्तकें, ब्लॉग्स, समाचार पत्र तथा पत्रिकाओं का प्रयोग किया गया है।

परिचय

1990 के दशक के बाद बदले वैश्विक परिप्रेक्ष्य और नई विश्व व्यवस्था के सन्दर्भ में गुटनिरपेक्ष की कहा जा रहा है कि गुट निरपेक्षता शीत युद्ध की देन थी और 1990 में दशक बाद शीतयुद्ध का दौर समाप्त हो चुका है। तो इसकी क्या प्रांसगिकता है? जब गुट नहीं रहे तो गुटनिरपेक्षता किस नाम की? वर्तमान में कहा जा रहा है कि वर्तमान दौर में वैश्विक परिदृश्य पर कोई भी महाशक्ति दूसरी महाशक्ति को शत्रु के रूप में नही देखती। सभी शक्तियों के मध्य एक–दुसरे के प्रति सौहार्दपूण सम्बन्ध है। अमेरीका और रूस मिलकर एक अन्तरिक्ष स्टेशन का संचालन कर रहे है और नाभिकीय ऊर्जा पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को उन्होनें नया आयाम दिया है। अमेरिका और चीन के बीच लगभग 300 अरब डॉलर का व्यापार है। रूस वर्तमान समय में पश्चिमी यूरोप, चीन और जापान के लिए ऊर्जा के प्रमुख आपूर्तिकर्ता के रूप में उभरा है। ऐसे में यह सवाल उठता है कि आखिर किस के विरूद्ध गुट–निरपेक्ष देश अपनी गुटनिरपेक्षता प्रदर्शित करेगें? परन्तू बदलते हुए अन्तर्राष्ट्रीय परिवश में गुटनिरपेक्षता की नीति एंव आन्दोलन पहले से अधिक प्रासंगिक है। यह सही है कि आज वैश्वीकरण के दौर में वैश्विक शक्तियाँ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर रही है और कोई भी राष्ट्र वर्तमान वैश्विक व्यवस्था से बाहर नहीं रह सकता। परन्तू इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि यह अप्रांसगिक हो चुका है। वैश्विक स्तर पर नए समीकरण बनने बिगड़ने के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के स्वभाव में निश्चित रूप से परिवर्तन आता है और इसका अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति सरंचना पर नकारात्मक या सकारात्मक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन भी इसका अपवाद नहीं है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का न तो लक्ष्य बदला है और न ही सार्थकता कम हुई है। जिस प्रकार से दुनिया में युद्ध और संघर्ष चल रह है। उनको देखते हुए इस आन्दोलन को पहले की अपेक्षा और अधिक सक्रिय करने की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं या बुनियादी मुददो पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

राजनीतिक प्रांसगिकता

शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद अनेक विद्वानों ने नई वैशिक व्यवस्था में गुटनिरपेक्षता आन्दोलन की राजनीतिक प्रांसगिकता के सन्दर्भ में अपने तर्क प्रस्तुत किये है। इनमें से प्रमुख है–

उभरता हुआ एक धुव्रीयवाद तथा राष्ट्र–राज्य प्रणाली का पतन आज सबसे महत्वूर्ण चिन्ता का विषय, जिससे तृतीय विश्व प्रभावित हो रहा है। वह है राष्ट्र–राज्य व्यवस्था का विघटन एंव एक ध्रुवीयता का बढ़ता प्रभाव। चैकोस्लवाकिया, इथोजिया भूतपूर्व सोवियत संघ तथ युगोस्लाविया में उदाहरण के सन्दर्भ में देखे जा सकते है। वर्तमान समय में पाश्चात्य जगत तृतीय विश्व के देशों की राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की रक्षा, आर्थिक समृद्धि, मानवाधिकार, लोकतन्त्र तथा स्थाई सरकार के नाम पर हस्तक्षेप कर रह हैं। जिसके परिणाम स्परूप राष्ट्रों की प्रभुसत्ता खतरें में पड़ती जा रही है। रजनी कोठरी के अनुसार सम्पूर्ण विश्व में नया राजनीतिक, सैनिक चिन्तन और नियोजन पश्चात्य जगत ही करता है। आया है चाहे वे पूर्व सोवियत संघ के गणराज्यों का मामला हो या युगोस्लाविया हो, इस्लामिक बहुराष्ट्रीयता के दावे हो, इजरायल– फिलस्तीनी टकराव हो या फिर रूस–यूक्रेन संघर्ष हो, दक्षिण अफ्रीका का मामला हो या फिर चीन की विस्तारवादी महत्वहकाक्षांए हो हर क्षेत्र में पैक्स अमेरीकाना की प्रक्रीया को लोकतन्त्र के नाम पर वैधता दी जा रही है। परन्तू यह लोकतन्त्र न तो

बहुध्रुवीय है न बहुपक्षीय है और न ही बहुलतावादी सभ्यतामूलक विचार का समर्थक यह तो एक युद्धरत लोकतन्त्र है। इस प्रक्रिया से विश्व शक्ति सन्तुलन असंतुलित हो गया है। इस लिए प्रफुल्ल किदवई जैसे विद्वानों का मानना है कि भारत सहित तृतीय विश्व के देशों का हित एकध्रुवीय विश्व में नहीं बल्कि बहुध्रुवीय विश्व में है। क्योंकि न्यायसंगत कारोबार, विकास विश्व आर्थिक समदृष्टि और सुरक्षा के मुद्दों पर स्वतन्त्र रूप से कार्यवाही की ज्यादा गुंजाईश पैदा करने के लिए यही एक रास्ता है। अतः गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के इस मंच विविध संस्कृतियों और विभिन्न महाद्वीपों वाले राष्ट्रों की आवाज को बुंलद करना होगा। केवल तभी बहुध्रुवीय विश्व की स्थापना की जा सकती है। इस बहुध्रुवीय व्यवस्था में सभी विकाशील राष्ट्रों की एकता और अखण्डता की सुरक्षा सुनिश्चित होगी और राष्ट्र–राज्य व्यवस्था सुदृढ़ होगी।

संयुक्त राष्ट्र संघ का लोकतान्त्रिकरण

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के बारे में सबसे महत्वूपर्ण तथ्य यह है कि अपने आरम्भ से ही यह संयुक्त राष्ट्र को मजबूत करने के लिए उल्लेखनीय प्रयास करता रहा है तथा इसकी प्रतिबद्धता संयुक्त राष्ट्र संघ की सर्वोच्चता के प्रति रही है। परन्तु वर्तमान समय में संयुक्त राष्ट्र और इनके प्रमुख अभिकरणों के उपरोतर दरकिनार किये जाने की आधुनिक प्रवृति हमारे गहन चिन्ता का विषय है यदि यह संस्था कमजोर पड़ती है। तो अपरिहार्य रूप से कमजोर देश दरकिनार हो जाएंगें तथा अधिक शक्तिशाली देशों के बीच सता और प्रभाव को लेकर झगड़े बढ़ेंगे अतः संयुक्त राष्ट्र संघ को सरंचनात्मक और प्रक्रियात्मक तौर पर पुनर्गठित किया जाना चाहिए ताकि इस संगठन के माध्यम से सभी देशों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके तथा समानता पर आधारित विश्व व्यवस्था की स्थापना हो सके।

गुटनिरपेक्षता, विदेशनीति के एक सिद्धांत के रूप में

प्रभुसता सम्पन्न राज्य–व्यवस्था के जन्म से प्रभुसता, स्वतन्त्रता और समानता को अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का आधार माना गया है। परन्तू वास्तव में पिछले तीन सौ वर्षों के दौरान इन आधारभूत तत्वों की काफी उपेक्षा की गई है और वर्तमान समय में भी ऐसा ही होता आ रहा हैं। अतः गुटनिरेपक्षता को विदेश नीति के सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया जाना जरूरी है। एम.एस. राजन का मानना है कि वर्तमान एक–ध्रुवीय विश्व में दुनियां के अधिकांश देशों विशेषकर तृतीय विश्व के देशों के लिए गुटनिरपेक्षता के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है। साम्राज्यवाद, शक्ति सन्तुलन, तटस्थता, सामुहिक सुरक्षा तथा गठबन्धनों की नीतियां किसी न किसी कारण से दुनियां के अधिकांश राष्ट्रों के हितों को सवंर्धित करने के लिए उपयुक्त है। जे बन्धोपाध्याय का मानना है कि वर्गीय चरित्र एंव कट्टर विचारधारा पर आधारित विदेश नीति की अपेक्षा वैज्ञानिक समाज पर आधारित विदेश नीति ही भारत सहित तृतीय विश्व के देशों के दीर्घकालीन हितों की रक्षा कर सकती है और गुटनिरपेक्षता इसके लिए सर्वोतम साधन है।

आर्थिक प्रांसगिकता

एक अन्य प्राथमिकता वाला क्षेत्र, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग है। यद्यति गुटनिरपेक्ष देश अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के ढांचे के पुननिर्माण पर जोर देते रहे है। ताकि विकासशील और विकसित राष्ट्र इसमें बिना किसी भेदभाव के प्रवेश कर सकें। परन्तु न्यायसंगत अन्तराष्ट्रीय व्यापार तथा टिकाऊ विकास की दिशा में कोई संतोषजनक परिणाम नहीं आया है।

कर्ज की समस्या

विकासशील देशों समक्ष अभी भी सबसे बड़ी समस्या गरीबी दुर करने की है। विकासशील देश एक और तो भारी कर्ज से डुबे पड़े है तथा दुसरी और विकसित देशों की उन्नत प्रौद्योगिक और बाजारों तक पहुंचने में अनेक समस्याएं उत्पन्न की जा रही है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की उत्पति से लेकर आज तक यह समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। विकासशील देशों की आर्थिक प्रगति में कर्ज की भयावह स्थिति के कारण उत्पन्न रूकावटों को दुर करने के लिए बहुपक्षीय प्रयास किये जाने अति आवश्यक है। गुटनिरपेक्ष इसके लिए बेहतरीन मंच है।

असमान अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

किसी भी मुक्त व्यापार व्यवस्था की बुनियादी शर्त यह है कि सभी पक्षों को बाजार में पहूंच का बराबर हक मिलना चाहिए, परन्तू विकसित देशों ने बड़ी ही चतुराई से गरीब देशों के बाजारों का हथिया लिया है और अपने बाजार नियम थोपकर उनके लिए दरवाजे बन्द कर दिये है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने पूरी दुनिया को एक सूत्र में पिरोते हुए एक महाद्वीपीय गांव के रूप में परिवर्तित कर दिया है। यह भी तय है कि जो भी विकास करना है। इस प्रक्रिया के भीतर रहकर की किया जा सकता है बाहर रहकर नहीं। अतः विकासशील देशों को ब्रिटेनवुडस संस्थाओं के लोकतान्त्रिकरण एंव आर्थिक प्रणाली को न्यायसंगत बनाने के लिए एक जुट होना होगा।

कृषि का उदारीकरण एंव बढ़ता हुआ संरक्षणवाद

विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था लगभग पुरी तरह से कृषि या उससे सम्बन्धित उत्पादों पर आधारित है। इन देशों के अधिकांश लोगों को कृषि के माध्यम से ही रोजगार प्राप्त होता है। विकसित देश विश्व व्यापार संगठन के माध्यम से इन देशों का यह आधार भी समाप्त करना चाहते है। सभ्यताओं के संघर्ष के वर्तमान युग में विकसित और विकासशील देशों के मध्य कृषि व्यापार का मुद्दा बुनियादी लड़ाई का रूप धारण करता जा रहा है। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद अब तृतीय विश्व, दो गुटों की प्रतिस्पर्धा का फायदा उठाने की स्थिति में नही है। विकसित देशों के बाजारों का स्टेग्नेशन हो रहा है। इसलिए विकासशील देशों पर अपने बाजार खोलने के लिए दबाव बनाया जा रहा है। तो दुसरी और अपने बाजारों को अनेक प्रकार के मानदण्ड निर्धारित करके बन्द किया जा रहा है। इसका सर्वोतम विकल्प दक्षिण–दक्षिण व्यापार सहयोग है। समस्यांए है परन्तू पारस्परिक सहयोग एंव लाभ की संभवनाएं भी निश्चित रूप से विद्यमान है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन इस प्रक्रिया को बढ़ाने का एक लाभकारी मंच सिद्ध हो सकता है।

सामरिक एंव मानवीय सन्दर्भों में प्रासंगिकता

वर्तमान समय मं विश्व परिदृश्य पर अनेक समस्याएं है। यथा–गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण, एड्स, आंतकवाद एवं पर्यावरणीय संकट मुख्यतः विकासशील देशों में ही संकेन्द्रित हो रह है। ऐसे में विकासशील देशों का एक मंच होने के कारण गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की आवश्यकता अपेक्षाकृत अधिक बढ़ जाती है। क्योंकि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ही विकासशील देशों के समक्ष उपस्थित इन सारी समस्याओं के निपटारे हेतू एक सांझा समाधान प्रस्तुत कर सकता है। वास्तव में गुटनिरपेक्ष आन्दोंलन का मुख्य औचित्य केवल दो गुटों से समान दुरी बनाएं रखना नहीं था, बल्कि नव– उपनिवेशवाद के संकट को कम करते हुए स्वतन्त्र निष्पक्ष तर्कससंगत, अपने हितों को सुरक्षित करने वाले निर्णय लेने की विकासशील देशों की क्षमता को प्रबल करना था, यह औचित्य आज भी बना हुआ है। तरह–तरह

की विचारधाराओं, शासन पद्धतियों, विचित्र जीवन–शैलियों और यहां तक की एक–दुसरे के जानी दुश्मन राष्ट्रों का एक ही मंच पर नियमित मिलन विश्व समुदाय के रूपांतरण में अद्वितीय भूमिका निभा सकता है। जिस समय नेहरू, नासिर और टीटों ने इस आन्दोलन की नींव रखी थी, तब दुनिया सोवियत संघ और अमेरिका दो गुटों में बटी हुई थी। साथ ही दोनों प्रतिद्वंदी महाशक्तियां परमाणु शास्त्रों से लैस थी और इन देशों के नेताओं की जनता में आदर्श छवि थी। इस नैतिक शक्ति के आधार पर उन्होनें इतने बड़े संगठन को खड़ा किया। हांलाकि उस समय भी महाशक्तियों अपने राष्ट्रीयस्वार्थों के अनुसार कार्य करती थी। परन्तु उस समय इतनी आशा तो थी कि दुनिया के करोड़ों निस्पक्ष आवाज विश्व पटल पर गूंज रही है। परन्तू आज स्थिति इसके विपरित है। आज कोई भी विश्व विख्यात नेता गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में नहीं बचा है। यदि 21वीं सदी के इस नए मोड़ पर कुछ दूरदृष्टि सम्पन्न देश इस आन्दोलन के सक्रिय संचालन के लिए आगे आए तो वे विश्व राजनीति को एक नई दिशा प्रदान कर सकते है। यह ठीक है कि दुनिया अब दो ध्रुवीय नहीं, परन्तु यह एक ध्रवीयतावाद भी कब तक स्थापित रहेगा, यदि गुटनिरपेक्ष राष्ट्र अपने मतभेदों को भुलाकर शान्तिपूर्ण सह–अस्तिव, न्याय सुरक्षा और विकास के लिए मिलकर काम करें। तो आश्चर्य नहीं की आने वाले कुछ वर्षों में यह दुनिया एक ध्रुवीय पर कई छोटे मोटे ध्रुव काम करने लगेंगें। ऐसी स्थिति में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन दुनिया के लिए एक वरदान हो सकता है। आज भी ये शुद्ध जब कुछ मुद्दों पर सर्वसम्मति का निर्माण कर सकते है तो वे इस प्रक्रिया को आगे क्यों नहीं बढ़ा सकते है?

वैश्वीकरण के युग में विकासशील देशों के समक्ष नए अवसर

वर्तमान समय में कुछ दक्षिण के देश, विश्व के प्रमुख सामान और सेवाएं आपूर्तिकता एव मांग के अन्तिम केन्द्रों के रूप में उभर रहें है। आज दक्षिण एक अच्छी व्यापार प्रणाली विकसित कर सकता है। क्योंकि 1990–2001 के दौरान दक्षिण–दक्षिण व्यापार 10प्रतिशित की वृद्धि दर से सालाना बढ़ा है। जो कि विश्व व्यापार की वृद्धि दर का दो गुणा है। विकासशील देशों के कुल व्यापार का 43प्रतिशत तथा विश्व व्यापार का 11 प्रतिशत व्यापार अब दक्षिण–दक्षिण व्यापार के माध्यम से आगे बढ़ रहा है। चीन, भारत ब्राजील तथा मैक्सिकों उतर–दक्षिण संवाद को आगे बढाने एंव विकासशील देशों की सहायता करने के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं भारत और ब्राजीलहाल के वर्षों में विकासशील दुनिया के प्रमुख राष्ट्रों के रूप में उभरे है। चीन और रूस को मिलाकर ये ब्रिक्स नाम के उस समूह का हिस्सा है। जिसकी अर्थव्यवस्था सबसे तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। और कुछ दशकों में सबसे शक्तिशाली बनने की आपूर्व संभावनाएं मौजूद है। जनवरी 2007 में एक जापानी शोधकर्ता ने अपने उपकल्पनाओं के परीक्षण में पाया कि ब्रिक्स तथा अन्य पूर्वी एशियाई और मध्यपूर्ण के देशों ने विश्व अर्थव्यवस्था को निश्चित रूप से प्रभावित किया है। कुछ अमेरीकी विद्ववानों का मानना है कि अब वितिय केन्द्र विकसित देशों की अपेक्षा विकासशील देशों की और स्थापित हो रहा है। हांगकांग और दुबई, न्यूयार्क और लन्दन के साथ प्रतियोगिता कर रह है। तथा अन्तराष्ट्रीय पूंजी बाजार में महत्पूर्ण भूमिका निभा रहें है। भारत और चीन विश्व पूंजीनिवेश को आकर्षित करने वाले प्रमुख केन्द्रों के रूप में उभरे है। पिछले वर्षों में रूस ने भी अपनी अर्थव्यवस्था मे गुणात्मक सुधार किया है और अब वह विश्व की 7वीं आर्थिक महाशक्ति बन गया है। इससे पहले जब सोवियत संघ का विघटन हुआ था। तो इसकी अर्थव्यवस्था बिल्कुल हाशिए पर पहूंच गई थी। ब्राजील– अमेरिका जापान तथा यूरोप का व्यापार सहयोग आर्थिक विकास दर के मुकाबले दो गुणा आगे बढ़ा है। आई. एम.एफ की ताजा रिपोर्ट के अनुसार 2007 में विकसित देशों की आर्थिक विकास की गति

विकासशील देशों के मुकाबले बहुत कम है। क्योंकि शीत युद्ध की समाप्ति के बाद इन देशों ने अपनी अर्थव्यवस्था में गुणात्मक सुधार किये है। जिसके कारण धीरे–धीरे इनका विकास हुआ है। तथा 21वीं शताब्दी में अपने आपको स्थापित कर पाए है। पाश्चात्य विद्ववान इस बात से आश्चर्यचकित है कि किस प्रकार ये देश प्रमुख आर्थिक केन्द्रों के रूप में उभर पाए? उनके अनुसार अब एक नई द्विध्रुवीय व्यवस्था स्थापित हो रही है। जिसमें एक और हताश पाश्चात्य जगत तथा दूसरी और उभरते हुए विकासशील देश है। इस विचार में पूर्ण सचाई न हो परन्तू कुछ सीमा तक अवश्य सत्य प्रतीत होता है। क्योकि ये देश विकास के अनेक विकल्प तलाश रहे है। इब्सा नाम से चर्चित हो रहें है। एशिया, दक्षिण एशिया, दक्षिण अमेरिका, और अफ्रीका महाद्वीप के तीन देशों भारत, ब्राजील तथा दक्षिण अफ्रीका आदि देशों के समूह की शुरूआत हुई है। भारत और ब्राजील विश्व व्यापार संगठन की वार्ता में कृषि प्रधान देशों के जी–20 समूह के प्रमुख सहभागी है। इस प्रकार तेजी से हो रहें परिवर्तन के कारण निर्णायक कदम उठाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

अतः हम कह सकते है कि शीत युद्ध की समाप्ति के बाद गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की भूमिका में निश्चित रूप से कमी आई है। विशेषकर राजनीतिक सन्दभों में। परन्तु इसका अर्थ यह कदति नहीं है कि बदलते परिवेश मे इस आन्दोलन ने अपनी प्रांसगिकता खो दी है। ''नैम'' विकास, व्यापार, आंतकवाद, अपराध, मानवधिकार, और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर सामूहिक राय कायम करने का मंच बन सकता है। ये सभी मुदद् आज सयुक्त राष्ट्र संघ और उनके सभी अभिकरणों के नेतृत्व में ग्लोबल एजेण्डे के हिस्से है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन विश्व व्यापार वार्ताओं में विकासशील देशों की प्राकृतिक सम्पदा पर यादि ध्यान दिया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि अगर अधिकांश देश अपनी अपार सम्पदा का समुचित उपयोग करें और पश्चिम जगत तथा जी–7 के देशों की अपेक्षा पारस्परिक सहयोग के अधार पर आर्थिक विकास की रणनीति अपनांए तो न केवल उनका रणनीतिक विकास तेजी से होगा। बल्कि आसान भी रहेगा। परन्तू ऐसा तभी संम्भव है। जब इन देशों आर्थिक व्यवस्था सम्बंन्धित दृष्टिकोण स्पष्ट हो। अन्तर्राष्ट्रीय वित संस्थाओं के तौर–तरीके, कर्ज का बोझ और युद्ध तथा शान्ति जैसे मामलों में भी एक जुटता महत्वपूर्ण हो। द्विपक्षीय विवादों में सलाह और बीच बचाव के लिए इस मंच की मदद् ली जा सकती है। सत्य है कि नैम एक संगठित व्यापारिक ईकाई के रूप में नहीं बदला जा सकता क्योंकि इस सन्दर्भ में अनेक रूकावटें एवं समस्यांए है। परन्तू उनमें किसी तरह समन्वयं तो हो ही सकता है। इस प्रकार यह आन्दोलन विश्व व्यवस्था का पूरक बनकर उसमें सार्थक योगदान दे सकता है।

संदर्भ

1. रत्नम, पी. (1970). नॉन–अलाईन्मैंद इन द सेवन्टीज. द इंडिया क्वाटरली. वा. XXX, नं. 1 जनवरी–मार्च।
2. (2007). नैम स्टेटमेंटस टू द फोर्थ एचआरसी. नॉन अलाईंड वर्ल्ड. वा. 27. न. 31. 1 मई।
3. ईस्तवान, तारोसे. (2005). नीड फॉर नान–अलाइनमेंट इन ऑवर ग्लोबल वर्ल्ड. दि नॉन अलाइन्ड मूवमेंट : टूडे एण्ड टूमारो. *क्रोशियन ऑफ इटरनेशनल रिलेशनस रिव्यू.* वा. XI], न. 40–41.
4. जॉन, चेरियन. (2003). सक्सेफल समीट. फ्रंटलाईन. वा. 20. 6 मार्च।

5. सुब्रहमन्यम, के. (2006). रेलिवेंस ऑफ नॉन–अलाईनमेंट. द ट्रिब्यून. नई दिल्ली. 5 सितम्बर।
6. राजन, एम.एस. (1991). गुटनिरपेक्षता : आन्दोलन एंव संभवनाँ. हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय. दिल्ली विश्वविद्यालयः दिल्ली।
7. शर्मा, जय किशन. (2004). एक नए संयुक्त राष्ट्र संघ की आवश्यकता. टाईमस ऑफ इंडिया. नई दिल्ली. 30 अप्रैल।
8. (2007). यूएन न्यूज. वॉ. 62. न. 1. जनवरी।
9. नारंग, ए.एस. (2007). नैम इन दी न्यू मिलेनियमः चेलंजिज एण्ड इश्यूज. प्रमिला श्रीवास्तव. (सं.) नॉन–अलाइंड मूवमेंटः एक्सटेंडिंग फ्रन्टायर्स. कनिष्क, नई दिल्ली।
10. कोठरी, श्रजनी. (2003). जनता से डरते अभिजन और कमजोर होता राष्ट्र राज्य. अभय कुमार दुबे (सं.) भारत का भूमण्डलीकरण. वाणी प्रकाशनः नई दिल्ली।
11. बिदवई, प्रफुल्ल. (2006). प्रभुसता का पतन. सहारा समयः नई दिल्ली. 7 जनवरी।
12. भांभरी, सी.पी. (2006). फारेन पॅलिसी फेसिज टफ् टैस्ट. सहारा टाइम्सः नई दिल्ली. 23 सितम्बर।
13. राजन, एम.एस. (1986). स्ट्डिस ऑन नॉन–इलाईन्मेंट एण्ड द नान–अलाइंड मूवमेंट. एबीसी पब्लिकेशनः नई दिल्ली।
14. राजन, एम.एस. (2003). द नैम समिट् एण्ड नॉन–एलाईन्मेंट वल्ड फोकस. वा. 24. न. 3. मार्च।
15. बन्धोपध्याय, ज्यनतनुजा. (2003). फ्रॉम नॉन– अलाईनमेंट? टू प्रोइम्पीरियलिज्म : क्लास एण्ड फोरन पॉलिसी ऑफ इंडिया. द मार्क्सिस्ट. वॉ. XIX. न. 2. अप्रैल–जून।
16. अमीन, स्मीन. (2006). बीयोन्ड यूएस हेजमनी. एसेसिंग द प्रोस्पेक्ट्स फोर ए मल्टीपोलर वर्ल्ड. जेड बुक्सः लंदन।
17. (2006). नवभारत टाईम्स. नई दिल्ली. 7 सितम्बर।
18. (2006). हिन्दुस्तान. नई दिल्ली. 8 सितम्बर।
19. यूरांग, वांग. (2007). राइज ऑफ डबलपिंग कन्ट्रीज एण्ड चेज ऑफ टाइम्स. फॉरेन अफेयर्स. न. 87. स्पिरिंग।
20. नेफे, अब्दुल्ल. (2005). इब्सा फोरम : द राइज ऑफ न्यू नॉन–अलाइनमेंट. इंडिया क्वटरली. वॉ. LXI. न. 1. जनवरी–मार्च।